आध्यात्मिक ज्ञान, गुणों एवं शक्तियों से विभूषित दादी प्रकाशमणि जी ऐसी सशक्त महिला का नाम है जिन्होंने महिलाओं को शक्ति स्वरूपा बनने का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया एवं उनकी छिपी हुई शक्तियों को जागृत किया। दादी जी ने विश्व के 130 देशों के लाखों भाई-बहनों को रूहानी सेवा में शामिल किया। उन्होंने अपनी अनुपम आध्यात्मिक दक्षता से समाज में जीवन मूल्यों की स्थापना की आधारशिला रखी।

25 अगस्त पुण्य स्मृति दिवस पर विशेष -

प्रकाश की दैदीप्यमणि 'दादी प्रकाशमणि'

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विशाल आध्यात्मिक संगठन का सफल नेतृत्व करते हुए दादी प्रकाशमणि जी ने अपने जीवनकाल में विश्व कल्याण का परचम फहराया। ऐसी महान विभूति का जन्म दीपावली के शुभ दिन पर सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के हैदराबाद शहर में हुआ था। दादी जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थी। उनका इस संस्था में एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में पदार्पण हुआ। उस समय इस संस्था को 'ओम मंडली' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपना जीवन मानव कल्याण हेतु प्रभु अर्पण कर दिया। आपने परमात्म शिक्षा से प्रेरित होकर अपने जीवन में पवित्रता, शांति, प्रेम, सरलता, दिव्यता, नम्रता, निरहंकारिता जैसे विशेष गुणों को अपनाकर आध्यात्मिक प्रकाश को फैलाने और मानव को महान बनाने के कार्य में सफल रहीं।

सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा ने अध्यात्म की मशाल दादी जी को सौंप दी और स्वयं सम्पूर्ण बन गए। पिताश्री जी के अव्यक्त होने के पश्चात् दादी जी ने सम्पूर्ण मानवता की सेवा करते हुए एक विशाल आध्यात्मिक संगठन को साथ लेकर विश्व सेवा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न जाति, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने के लिए मानवता में विश्व-बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जगाने के लिए आत्मिक एवं प्रभु संतान की स्मृति दिलाई तथा परमात्म अवतरण के ईश्वरीय संदेश को अल्प समय में सम्पूर्ण विश्व के क्षितिज पर गुंजायमान किया।

आपके कुशल नेतृत्व के कारण संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का परामर्शक सदस्य बनाया एवं यूनिसेफ ने भी अपने कार्यों में अपना सहभागी बनाया। आपके नेतृत्व में संस्था ने विश्व शांति हेतु कई रचनात्मक एवं सार्थक कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए। उनकी उपलब्धियों को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1987 में एक अंतर्राष्ट्रीय तथा 5 राष्ट्रीय स्तर के 'शांतिदूत' पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

कुशल प्रशासिका दादी जी के कर्तव्यों, गुणों, चरित्रों और महानताओं की झलक सर्व को अपनी ओर आकर्षित करती थी। ऐसी विशालहृदयी व्यक्तित्व की धनी थी दादी प्रकाशमणि जी, जिनके दर्शन मात्र से ही दु:ख, अशांति एवं चिंताएं दूर हो जाती थीं। आप सबके दिलों में अमर हैं। ऐसी महान विभूति दादी जी ने 25 अगस्त, 2007 को अपनी भौतिक देह का त्याग कर नई दुनिया के निर्माण हेतु अव्यक्त यात्रा को प्रस्थान किया। उन्हें सर्व ईश्वरीय परिवार एवं देश-विदेश की ओर से ग्यारहवीं पुण्य स्मृति दिवस पर शत्-शत् नमन।

ईश्वरीय सेवा में

मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा की पुनर्स्थापना को देखते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने 30 दिसबर, 1992 को दादी प्रकाशमणि जी को डॉक्टरेट की मानद् उपाधि देकर सम्मानित किया।

दिनांक:_____

Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya
World Hqs.: Mount Abu - 307 501 (Rajasthan) India. Website : www.brahmakumaris.com